मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

(ग्रामीण कृषि मौसम सेवा)

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर– 342003

दिनांकः 04 जुलाई 2014

जोधपुर

जिले के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग, क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केन्द्र, जयपुर से प्राप्त मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

मौसमी तत्व / दिनांक	04-07-14	05-07-14	06-07-14	07-07-14	08-07-14
वर्षा (मि.मी.)	1	1	2	1	0
अधिकतम तापमान (°सेल्सियस)	37	37	35	35	36
न्यूनतम तापमान (°सेल्सियस)	29	30	29	28	27
बादलों की स्थिति (ओक्टा)	2	4	6	3	3
सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत) सुबह	69	62	61	66	68
सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत) शाम	40	32	30	33	34
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	18	20	21	25	25
हवा की दिशा	पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम	पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम	पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम	पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम	पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम

मौसम पूर्वानुमान के आधार पर कृषि परामर्श सेवा, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा इस जिले के किसानों को सलाह :

मानसून की वर्षा होते ही खरीफ की फसल बाजरा, मूंग, मोठ व ग्वार की बुवाई के लिए निम्न किस्मों की सिफारिश की जाती है।

बाजरा :– आर.एच.बी 177, आई.सी.टी.पी. 8203, आर.एच.बी 121, आर.एच.बी 173, आर.एच.बी 154, जी.एच.बी. 538, एच.एच.बी 67(इम्प्रूव्ड)

मूंग :– के 851, आर.एम.जी 62, आर.एम.जी 268, आर.एम.जी 344, एस.एम.एल 668

मोठ :– आर.एम.ओ 40, आर.एम.ओ 435, आर.एम.ओ 257, आर.एम.ओ 225, काजरी मोठ-2

ग्वार :– आर.जी.सी 936, आर.जी.सी 1002, आर.जी.सी 1003, आर.जी.सी 1017, आर.जी.एम 112

बाजरे के बीज को गूंदिया या चेपा रोग से बचाव हेतु नमक के 20 प्रतिशत घोल (1 किलो नमक में 5 लीटर पानी) में लगभग पांच मिनट डुबोकर, निथार कर साफ पानी से धो लें। अन्त में प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाइरम से उपचारित करें।

सिंचित मूंगफली की फसल जिन क्षेत्रों में एक माह के करीब हो गई है वहॉ निराई गुड़ाई कर खरपतवार निकाल देवे।

पपीते के पौधे की रोपाई करने का भी यह उचित समय है गढडे में रोपाई से पूर्व सडी हुई गोबर की खाद, 300 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट व 50 ग्राम क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण मिलाये।

जिन किसान भाईयों को मानसून में फलदार पौधे लगाने है व खेत में गढडे खोद कर खाद व दीमक की दवाई मिलाकर तैयार कर ले तथा वर्षा आने पर फलदार पाधे लगावें। जलवायु के अनुसार आंवला, बेर, अनार, गुंदा, नींब, करौदा और बिलपत्र आदि उगाये जा सकते है।

पशुपालक बरसात से पहले अपने पशुओं में गलघोंटू व लंगड़ा बुखार रोग के टीके आवश्यक रूप से लगवायें। पशु आवास को स्वच्छ रखें।

पशुओं को बरसात से बचाव हेतु उचित प्रबन्ध करें। फर्श तथा बिछावन को सूखा रखें। मक्खी व मच्छर से बचाव करें।